अष्टाध्यायी का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत कीजिए। Uma Pathak Deptt. of Skt. BA Ist+II Yr.

संस्कृत - व्याकरण शास्त्र में पाणिनि का योगदान अमर है।
लौकिक संस्कृत के साथ वैदिक भाषा की तुलना एवं उनके
शब्दों की सूक्ष्म विवेचना इनके व्याकरण की विशिष्टता है।
अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'अष्टाध्यायी' में इन्होंने ३९७८
(3978) सूत्रों (तथा 14 (15) प्रत्याहार सूत्रों के द्वारा तात्कालिक
भाषा का जैसा सर्वेक्षण उन्होंने किया है, वैसा किसी भाषा
के किसी ग्रंथ में नहीं है। यह आठ अध्यायों में विभाजित
सूत्र - ग्रंथ है, प्रत्येक अध्याय को 4-4 (चार - चार) पादों
में विभक्त किया गया है। विषयों का क्रम प्रकरण के
अनुसार अनुवृत्ति को ध्यान में रखकर किया गया है।
यह अपरिचित भाषा को सिखाने वाली रचना नहीं है बल्कि
परिचित - प्रचलित भाषा के पदों का विवरण देने वाली
कृति है। लोक तथा वेद में प्रयुक्त प्रत्येक पद की व्याख्या
करना इसका लक्ष्य है

अष्टाध्यायी को समझने के लिए उन्होंने कुछ सहायक
ग्रंथों को भी परिशिष्ट के रूप में लिखा - गणपाठ, धातुपा
लिंगानुशासन तथा उणादि सूत्र — इन पाँचों का संयुक्त
नाम है - 'पञ्चपाठी'। इस प्रकार पाणिनि ने अपने
व्याकरण - प्रस्थान का प्रवर्तन इसे सर्वांगपूर्ण बनाने के
उद्देश्य से किया था। यह कहा जाता है कि यदि संस्कृत
की 'शब्द - सम्पदा' सम्पूर्ण रूप से नष्ट भी हो जाए तो भी
'अष्टाध्यायी' के द्वारा उसका पुनरुद्धार किया जा स
सकता है।

इसीलिए व्याकरण के सभी दस उपलब्ध प्रस्थानों
में व्यापकता, गंभीरता एवं स्वीकार्यता के कारण अग्रणी
है।

Scanned with CamScanner

पाणिनि के मौलिक तथा व्याकरणिक योगदान का आकलन निम्नांकित बिंदुओं पर किया जा सकता है -

(1) माहेश्वर सूत्र या प्रत्याहार सूत्र अष्टाध्यायी के आधार हैं। ये वर्णोपदेश के रूप में हैं, जिनसे वर्ण संक्षेप के लिए प्रत्याहार बनते हैं जैसे - अण् (अ, इ, उ), अच् (अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ और औ), हल्, अक्, जश् आदि। स्वरों को मूल तथा सन्ध्यक्षर (क्रमशः - मूल - अ, इ, उ, ऋ, ऌ; सन्ध्यक्षर (ए, ओ, ऐ, औ) के रूप में बाँटकर व्यञ्जनों को अन्तःस्थ, स्पर्श (विपरीत क्रम से पंचम, चतुर्थ, द्वितीय, ~~तृतीय~~ और प्रथम के रूप में) तथा ऊष्म के क्रम से सजाकर ध्वनिविज्ञान के क्षेत्र में समर्थ पद स्थापित किया गया है।

(2) अष्टाध्यायी में लाघव के लिए अनेक विधियों का प्रयोग है जैसे - प्रत्याहार, गण व्यवस्था, अनुबंधों का विनिर्देश, अधिकार - सूत्र, अनुवृत्ति तथा प्रयोजनों से ~~अनुयोग~~ विनियोग, परिभाषा - सूत्र।

प्रत्याहार माहेश्वर सूत्रों तक ही सीमित नहीं है जैसे - अच् - सभी स्वरवर्ण, जश् - सभी तृतीय वर्ण, शल् - ऊष्मवर्ण, अल् - स्वर + व्यञ्जन वर्ण)। सुप्, तिङ्, सुट् इत्यादि के रूप में प्रत्यय - समूह भी इसकी परिधि में आते हैं। दो वर्णों का प्रत्याहार अनेक वर्णों का लाघव है।

(3) संधि के नियमों को अष्टाध्यायी के षष्ठ और अष्टम अध्यायों में पाणिनि ने विस्तार से उल्लेख किया है। इस प्रसंग में षत्व, णत्व, जश्त्व, चर्त्व आदि सभी प्रकार के वर्ण परिवर्तन स्पष्ट किए गये हैं।

(4) व्याकरण की महत्वपूर्ण प्रक्रिया सामान्य नियम (उत्सर्ग) तथा अपवाद (विशेष) के रूप में पाणिनि ने अपनाया है। जैसे दीर्घ होने का सामान्य नियम देकर (अकः सवर्णे दीर्घः) पुनः अपवाद के कई सूत्रों का उल्लेख किया है। इन स्थानों में दीर्घ का प्रसंग होने पर भी नहीं होगा।